

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १७२३
क

Title विष्णुशतनाम

Author

Extent ८ पत्र Age

Subject स्थिति

6059
F- B Complete
Minned
विसुशतनाम

नं. १०२३

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ वासुदेवाय
नमः ॥ ॐ ह्यषीकेशाय नमः ॥ ॐ वा
सनाय नमः ॥ ॐ जलशायिने
नमः ॥ ॐ जनार्दनाय नमः ॥ ॐ
हरये नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥

श
२

ॐ श्रीवत्सायनम ॐ गारुडधजा
यनमः ॥ ॐ वराहायनमः ॥ १० ॥
ॐ प्रेङ्गीकायनमः ॥ ॐ नृ
सिंहायनमः ॥ ॐ तरकायनमः ॥
यनमः ॥ ॐ अव्यक्तायनमः ॥

गेणस्यतायनमः॥ गेविस्सवे
 नमः॥ गेअनेतायनमः॥ गेअ
 जायनमः॥ गेअव्यायनमः
 गेनायणायनमः॥ २॥ गेग
 दायादायनमः॥ गेगेविंदा

श

२

२

यनमः॥ गैकीतिभाजनायन
मः॥ गैरावर्द्धनधरायनमः॥
गैदेवायनमः॥ गैभूधराय
नमः॥ गैभुवनेश्वरायनमः॥
गैवेत्रेनमः॥ गैयज्ञपुरुषाय

नमः॥ ॐ यज्ञेशाय नमः॥ ॐ य
ज्ञवाहनाय नमः॥ ॐ चक्रपाण
ये नमः॥ ॐ गदापाणये नमः॥ ॐ
शेखपाणये नमः॥ ॐ तपोनमा
य नमः॥ ॐ वैकुण्ठाय नमः॥ ॐ इष्ट

श
३

3

दमताय नमः॥ ॐ भूगर्भाय नमः॥
ॐ पीतवाससे नमः॥ ॐ त्रिविक्र
माय नमः॥ ५॥ ॐ त्रिकालज्ञाय
नमः॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः॥ ॐ त्रेदि
केश्वराय नमः॥ ॐ रामाय नमः॥

ॐ गामायनमः ॥ ॐ ह्यग्रीवाय
नमः ॥ ॐ भीमायनमः ॥ ॐ रोद्रा
यनमः ॥ ॐ भवोद्भवायनमः ॥
ॐ श्रीपतयेनमः ॥ ५० ॥ ॐ श्रीध
रायनमः ॥ ॐ श्रीशायनमः ॥ ॐ

श
ध

मंगलाय नमः॥ ॐ मंगलाय
नमः॥ ॐ दामोदराय नमः॥ ॐ
केशवाय नमः॥ ॐ केशिन्द्र
नाय नमः॥ ॐ वरेण्याय नमः॥
ॐ वरदाय नमः॥ ॐ विश्वसैन

मः॥६॥ गें आने दा यत मः॥ गें वस
दा यत मः॥ गें वस वेत मः॥ गें दि
रण्यत न संकाशायत मः॥ गें सु
र्य कोटि सम प्रभायत मः॥ गें दि
रण्यरेत सेत मः॥ गें दीप्तायत मः॥

श
 ५
 ५
 ओं प्रशान्तय नमः ॥ ओं प्रहृष्टय नमः ॥
 य नमः ॥ ओं सकलाय नमः ॥ ७५ ॥
 ओं निष्कलाय नमः ॥ ओं अद्वाय
 नमः ॥ ओं निर्गुणाय नमः ॥ ओं गु
 णसंस्थिताय नमः ॥ ओं मेव श्या

मायनमः॥ गेंचतर्वादेवेनमः॥
गेंकुशलायनमः॥ गेंकमलेच
णायनमः॥ गेंज्योतित्रूपायनमः
गेंअत्रूपायनमः॥ ८०॥ गेंस्वत्रूपा
यनमः॥ गेंहृदिस्थितायनमः॥

श
६

६

ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥ ॐ सर्वभूतस्थाय
नमः ॥ ॐ सर्वेश्वराय नमः ॥ ॐ स
र्वतो मुखाय नमः ॥ ॐ ज्ञानाय न
मः ॥ ॐ कृदस्थाय नमः ॥ ॐ अचला
य नमः ॥ ॐ ज्ञानदाय नमः ॥ ६०

ॐ परमायतनमः॥ ॐ अभवेतनमः॥
ॐ योगीशायतनमः॥ ॐ योगतिष्ठा
यतनमः॥ ॐ योगितेनमः॥ ॐ योग
त्रापिणेनमः॥ ॐ ईश्वरायतनमः॥
ॐ सर्वभूतेषायतनमः॥ ॐ सर्व

श

७

7

भूतसमायनमः॥ गेविभवेनमः॥
इतिनामशते दिव्यैस्सर्वे
लपापदे॥ व्यासेन कथितं पूर्व
सर्वपापप्रणाशने॥ यः पठे
त्यानरुत्याय स भवेत्सर्वे

नरः सर्वपापविश्रुतात्मविस्त्र
सायुज्यमाप्नुयात् ॥ चंद्रायण
सहस्राणिकत्यादातशतानि
च भावांलतसहस्राणि मुक्ति
भागो भवेन्नरः ॥ इति श्री विस्रुता

श
८
४

नामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

